लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

तुलसीदास कृत रामचरित मानस

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

रामचरितमानस

'रामचरितमानस' गोस्वामी तुलसीदास रचित उनका एक लोकप्रिय महाकाव्य है जिसमें रामकथा का आधार ग्रहण कर उसकी लोकप्रियता लोकोपयोगिता की सिद्धि के लिए भारतीय संस्कृति के सिद्धांतों को लौकिकता प्रदान करते हुए उसके सम्बत्व को ही अपनी प्रस्तुत कृति का सैद्धान्तिक आधार बनाया है तभी तो वे कहते हैं –

" चारिउ वेद पुराण अष्टदश
छहो शास्त्र सब ग्रंथन को रस
मुनि जन धन संतन को सर्वस
सार अंश सम्मत सबही की ।।"

सच तो यह है कि अवधी जैसी सहज और व्यापक जनसमूह की भाषा के माध्यम से गोस्वामी जी ने रामकथा को जन-जन का कंठहार बना दिया । 'रामचरितमानस' गोस्वामी जी कीर्ति का एक ऐसा आधार स्तंभ है जिसमें आदर्श भावों की सृष्टि के क्रम में शील, सौजन्य, त्याग एवं धैर्य अपने उत्कृष्टतम रूप में प्रस्तुत होने के साथ ही अनन्य समर्पण, नीति, स्नेह, शील, विनय तथा

त्याग के द्वारा लोकधर्म की प्रतिष्ठा हुई है। डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय कहते हैं – "वास्तव में 'मानस' भारत की भक्तिप्रवण जनता के गले का कंठहार ही नहीं है, वह साहित्य की दृष्टि से संसार के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्यों में ही नहीं वरन् उसमें साक्षात् सरस्वती के अवतरित होकर देश के उदात्त एवं उर्ध्वगामी शक्तियों को प्रश्रय और प्रेरणा एवं स्फूर्ति प्रदान की है और उसके संतप्त जीवन को शीतलता प्रदान करने का सर्वोत्तम साधन बना दिया है। शक्ति, शील, सौन्दर्य वैराग्य आदि भारत की सर्वश्रेष्ठ सांस्कृतिक परंपराओं से समन्वित होने के कारण वह गीत्ज के शब्दों में, 'नेशनल एपिक' बन गया है। इसके मूल में लोक कल्याण और लोकमंगल है।"

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि 'रामचरितमानस' गोस्वामी तुलसीदास की सर्वश्रेष्ठ कृति है। इसमें गोस्वामी जी के द्वारा लोककल्याण भावना को पहचानने की कोशिश की गयी है।